भा.कृ.अनु.प.- भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली के 62वें दीक्षांत समारोह के दौरान प्रोफेसरों की प्रस्तुति

07.02.2024

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान के 62वें सम्मान समारोह के सप्ताह (4 फरवरी से 9 फरवरी, 2024) की शुरुआत दिनांक 04 फरवरी, 2024 को शैक्षिक उत्साह के साथ हुई। 6 फरवरी, 2024 को, विभिन्न शिक्षण विषयों (फसल सुधार, फसल सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं आधारभूत विज्ञान) का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रोफेसरों की प्रस्तुति आयोजित की गईं, जिनमें वर्ष 2023 के महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में विवरण दिया गया।

चौथे दिन, विभिन्न शिक्षण विषयों (औद्यानिकी विज्ञान और सामाजिक विज्ञान) के प्रोफेसरों की प्रस्तुतियां आयोजित हुईं, जिनमें वर्ष 2023 की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में विवरण दिया गया।

सत्र का आयोजन डॉ. मोनिका ए. जोशी, प्रोफेसर, बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगकी संभाग और सह-संयोजक डॉ. श्रुति सेठी, प्रधान वैज्ञानिक, फल एवं औ. प्रौ. संभाग द्वारा किया गया।

औद्यानिकी विज्ञान स्कूल के सत्र की अध्यक्षता डॉ. मेजर सिह, सदस्य (पी एस), कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल, नई दिल्ली द्वारा की गई। इस सत्र में पुष्प विज्ञान एवं भू-निर्माण वास्तुकला, फल विज्ञान, फसलोत्तर प्रबंधन और सशाकीय विज्ञान संभागों के प्रोफेसरों ने छात्रों के शोध की उपलब्धियों और मुख्य विशेषताओं को प्रस्तुत किया। साथ ही पुष्प विज्ञान एवं भू-निर्माण वास्तुकला के विस्तीर्णता शोध अजैविक तनाव के लिए सजावटी फसलों के जर्मप्लाज्म के इन विवो और इन विट्रो मूल्यांकन पर किए गए थे; ऊतक संवर्धन तकनीकों का उपयोग करके पुष्प की फसलों पुष्प की फसलों में सुधार; सजावटी पौधों की उत्पादन तकनीक और भूदृश्य निर्माण में उनका उपयोग; और बड़े पैमाने पर गुणन के लिए पुष्पों की फसलों का सूक्ष्म प्रसार; फल विज्ञान के विषय आनुवंशिक अध्ययन और लक्षण वर्णन; पुष्पन एवं परागण अध्ययन; उत्परिवर्तन अध्ययन; पीजीआर, अजैविक तनाव प्रबंधन और फसल उत्पादनसे संबंधित थे। कटाई उपरांत प्रबंधन के तहत अनुसंधान का प्रमुख केंद्र बिदु ताजे फलों और सब्जियों की कटाई उपरांत उनके प्रबंधन पर था; बागवानी फसलों का प्रसंस्करण; और कृषि योग्य फसलों का प्रसंस्करण आदि पर चर्चा की गई। शाकीय विज्ञान के लिए आनुवंशिक विविधता और पोषण संबंधी अध्ययन प्रमुख केंद्र बिदु थे; जैविक और अजैविक तनाव सहनशीलता और उत्पादन प्रणाली का मानकीकरण पर भी संवाद किए गए।

सामाजिक विज्ञान स्कूल का सत्र डॉ. वी.वी. सदामते, पूर्व सलाहकार कृषि योजना आयोग, नई दिल्ली की अध्यक्षता में संचालित किया गया। इस सत्र में कृषि अर्थशास्त्र का प्रमुख अनुसंधान में कृषि में मुख्य केंद्र मानव-वन्यजीव संघर्ष पर था; जलवायु परिवर्तन की संवेदनशीलता और जोखिम प्रबंधन; कृषि बाजार और मूल्य श्रृंखला; संस्थागत नवाचार और ग्रामीण आजीविका; कृषि विस्तार के लिए अनुसंधानों का मुख्य केंद्र सरकारी केंद्रित कार्यक्रम, योजनाओं और प्रथाओं का मूल्यांकन किया गया; पोषण और स्वास्थ्य; उद्यमिता विकास; विस्तार प्रणालियों में नवाचार; मीडिया और आईसीटी तथा जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं के अनुकूलन से संबंधित अन्य मुद्दे, किसान -नेतृत्व में फसल आनुवंशिक संसाधनों का संरक्षण और सुधार, और उत्तरी भारत में कृषि परिवारों का प्रवास आदि थे। कृषि सांख्यिकी, जैव सूचना विज्ञान और कंप्यूटर अनुप्रयोग के लिए प्रयोगों के डिजाइन पर प्रमुख फोकस; नमूना सर्वेक्षण; सांख्यिकीय मॉडलिग; सांख्यिकीय आनुवंशिकी; संपूर्ण जीनोम, प्रोटीनोम, मेटागेनोम विश्लेषण; कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, जैव सूचना विज्ञान में सांख्यिकीय तकनीक; कृषि में निर्णय समर्थन प्रणाली, मशीन लर्निंग और वेब-मोबाइल आधारित एप्लिकेशन आदि विषयों पर चर्चा में मुख्य ध्यान केंद्रित था।

XXIII सुकुमार बसु मेमोरियल पुरस्कार के प्राप्तकर्ता डॉ. वाई.एस. शिवे, प्रोफेसर और प्रधान वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं. पोषक तत्व प्रबंधन और धान-गेहूं फसल प्रणाली पर विशेषज्ञ थे। उन्होंने जिक: खाद्य एवं पोषण सुरक्षा विषय पर अपना विचारशील व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. सुरेश कुमार चौधरी, उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन), भा.कृ.अनु.प. ने पुरस्कार व्याख्यान सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. अनुपमा सिह, संयुक्त निदेशक शिक्षा और अधिष्ठाता, भा.कृ.अनु.सं. ने XXIII सुकुमार बसु स्मारक पुरस्कार व्याख्यान आयोजित किया।

सभी सत्रों के अध्यक्ष ने स्नातकोत्तर अनुसंधान की गुणवत्ता की सराहना की और प्रोफेसरों को कृषि विज्ञान की उन्नति के लिए गुणवत्तापूर्ण जानकारी उत्पन्न करने के लिए गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

सौजन्य

भा.कृ.अनु.सं. मीडिया प्रकोष्ठ, नई दिल्ली